International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 3,March- 2017, pp. 346-351
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939| Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

"अलवर जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन"

डॉ॰ कुलदीप शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
गौरी देवी महिला महाविद्यालय, अलवर

वरूण कुमार जैमन
शोधार्थी
राजस्थान विश्वविद्यालय ,जयपुर

सार

पारिस्थितिकी पर्यटन पर्यावरण पर्यटन पूरी तरह से पर्यटन के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण है। पर्यावरण पर्यटन संरक्षण और स्थानीय लोगों के लिए फायदेमंद प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना है कि आर्थिक अवसरों का निर्माण करते समय, पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता को परेशान करने के लिए नहीं ख्याल रख रही है, वातावरण की सांस्कृतिक और प्राकृतिक इतिहास की सराहना करने के लिए प्राकृतिक क्षेत्रों के लिए एक संरक्षण यात्रा है। शिक्षा और व्याख्या एक प्रमुख घटक कहां है और स्थानीय लोग लाभान्वित होते हैं जहां प्रकृति पारिस्थितिकी टिकाऊ, आधारित है,ृ एक ट्रैवल इन घटकों में से किसी एक को पूरा नहीं करता है, तो यह एक वास्तविक पारिस्थितिकी पर्यटन के उपक्रम नहीं कहा जाता है। उम्र के बाद से, प्रकृति पूजा और संरक्षण नैतिकता भारतीय सोचा और परंपराओं का एक अविभाज्य हिस्सा रहा है सरिस्का बाघ अभयारण्य भारत में सब से प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है। यह राजस्थान के राज्य के अलवर जिले में स्थित है। इस क्षेत्र का शिकार पूर्व अलवर राज्य की शोभा थी और यह 1955 में इसे वन्यजीव आरक्षित भूमि घोषित किया गया था। 1978 में बाघ परियोजना योजना रिजर्व का दर्जा दिया गया।

कुंजीशब्द अलवर जिले , पारिस्थितिकी पर्यटन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 3, March- 2017, pp. 346-351
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939| Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

प्रस्तावना

अलवर भारत के राजस्थान राज्य का एक शहर है। अलवर शहर दिल्ली से 150 किमी दक्षिण में और जयपुर से 150 किमी उत्तर में स्थित है। यह भारत के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आता है व राजस्थान में अलवर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय भी है। अलवर कई किलों, झीलों, हेरिटेज हवेलियों और प्रकृति भंडार के साथ पर्यटन का एक केंद्र है । यह नगर राजस्थान के जयपुर अंचल के अंतर्गत आता है। दिल्ली के निकट होने के कारण यह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में शामिल है। राजस्थान की राजधानी जयपुर से करीब 160 कि०मी० की दूरी पर है। अलवर अरावली की पहाडियों के मध्य में बसा है। चारदीवारी और खाई से घिरे शहर में एक पर्वतश्रेणी की पृष्ठभूमि के सामने शंक्वाकार छन्द की पहाड़ी पर स्थित बाला किला इसकी विशिष्टता है। 1775 में इसे अलवर रजवाड़े की राजधानी बनाया गया था। वर्तमान में अलवर राजस्थान का महत्त्वपूर्ण औधोगिक नगर हैं तथा आठवाँ बड़ा नगर हैं। अलवर को **राजस्थान का सिंह द्वार** भी कहते हैं। अलवर यादव बाहुल्य जिला है। मतस्य प्रदेश अथवा अलवर का राठ क्षेत्र (बहरोड तथा नीमराना और मुंडावर का क्षेत्र) पूरे जिले में अपना अलग ही प्रभाव रखता है।

अलवर शहर अलवर जिले का जिला मुख्यालय है और समुद्र तल से 270 मीटर की ऊंचाई पर 27 ° 34′ उत्तरी अक्षांश और 76 ° 35′ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। यह जिला 8380 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 3, March- 2017, pp. 346-351
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939| Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

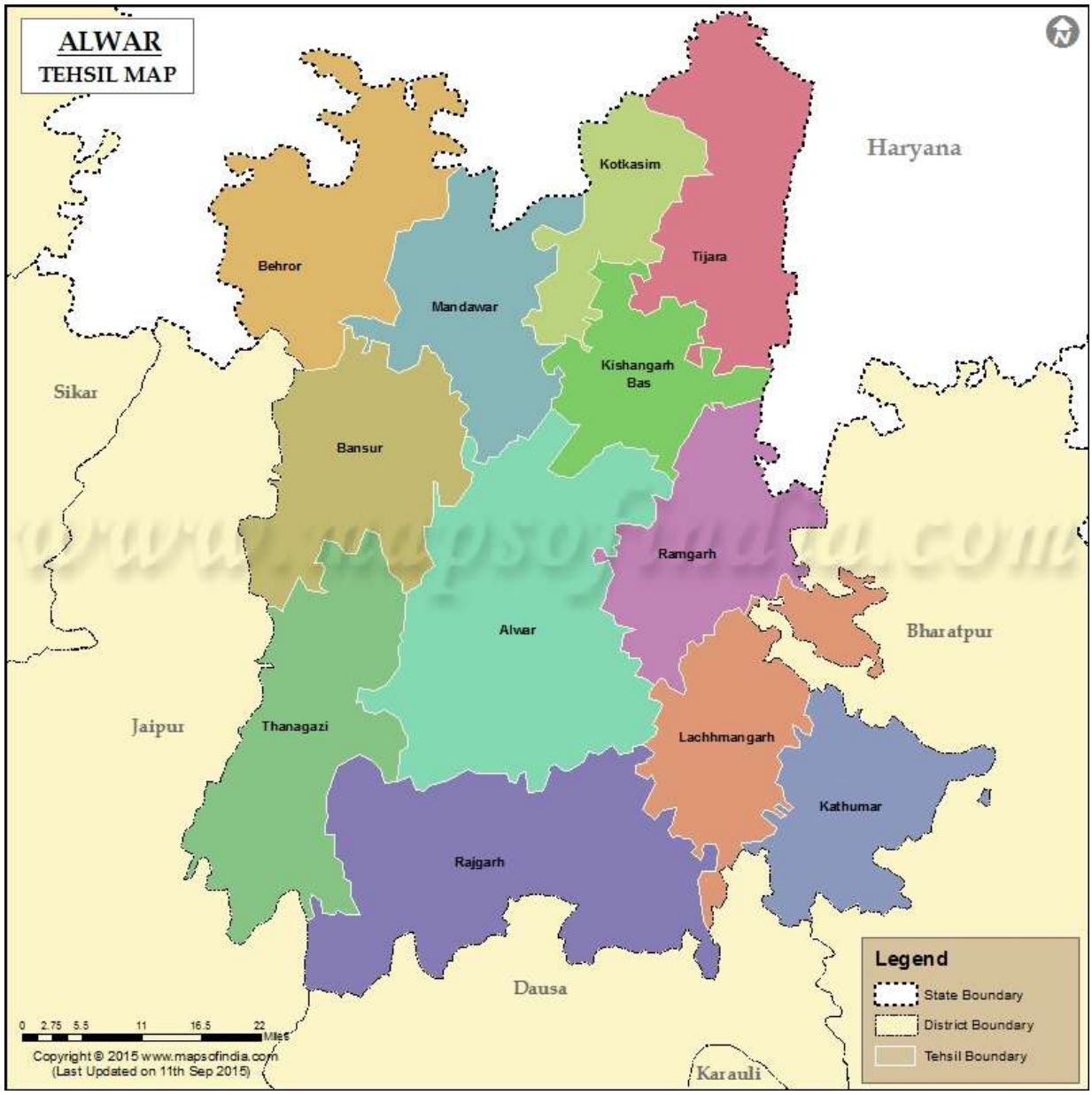

अलवर पर्यटन

1. सरिस्का अलवर

राजस्थान के अलवर जिले में अरावली की पहाड़ियों पर 800 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला सरिस्का मुख्य रूप से वन्य जीव अभयारण्य और टाइगर रिजर्व के लिए प्रसिद्ध है। अलवर के सरिस्का की गिनती भारत के जाने माने वन्य जीव अभयारण्यों में की जाती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 3, March- 2017, pp. 346-351
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939| Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

अरावली पहाड़ियों में बसा सरिस्का नेशनल पार्क लगभग 800 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फेला हुआ है जिसे 1982 में एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में घोषित किया गया था। जो अलवर में देखने के लिए शीर्ष स्थानों में से एक है। घास के मैदान, शुष्क पर्णपाती वन और चट्टानी परिदृश्य को कवर करता हुआ सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य अब एक सरिस्का रिजर्व टाइगर के रूप में जाना जाता है।

रिजर्व अपने राजसी रॉयल बंगाल टाइगर्स के लिए प्रसिद्ध है। जो बाघों (रणथंभौर से) को सफलतापूर्वक स्थानांतरित करने वाला पहला बाघ अभयारण्य है। जो इसे एक महान पर्यटक आकर्षण बनाता हैं। सरिस्का नेशनल पार्क इतिहास प्रेमियों के साथ–साथ प्रकृति प्रेमियों, वन्यजीव उत्साही लोगों के लिए लोकप्रिय बना हुआ है। जो अलवर में घूमने के लिए आदर्श स्थानों में से एक है।

सरिस्का बाघ अभयारण्य 1955 में वन्यजीव आरक्षित भूमि घोषित किया गया था। 1978 में बाघ परियोजना योजना रिजर्व का दर्जा दिया गया। पार्क वर्तमान क्षेत्र 866 वर्ग किमी में फैला है। पार्क जयपुर से 107 किमी और दिल्ली से 200 किमी दूरी पर है। सरिस्का बाघ अभयारण्य में बाघ, चित्ता, तेंदुआ, जंगली बिल्ली, कैरकल, धारीदार बिज्जू, सियार स्वर्ण, चीतल, साभर, नीलगाय, चिंकारा, चार सींग शामिल श्मृगश बीवनेपदहीं, जंगली सुअर, खरगोश, लंगूर और पक्षी प्रजातियों और सरीसृप के बहुत सारे वन्य जीव मिलते है। यहा से बाघों की आबादी 2005 में गायब हो गयी थी लेकिन बाघ पुनर्वास कार्यक्रम 2008 में शुरू करने के बाद् अब यहा पाच बाघ हो गये थे।

सरिस्का की विशेषता बाघों की वजह से है ओर यह पहाडियों के बीच बसा है। बाघों की गिनती उनके ऊपर उपस्थित रेखाओं के आधार पर की जाती है। रेखाओं की बनावट सभी

बाघों में अलग अलग होती है, जो इन्हें एक विशेष पहचान देती है। कैमरे से स्नैपशॉट लिए जाते है। फिर उनकी गिनती शुरू होती है। शोधकर्ता प्रत्येक स्नैपशॉट मैन्युअल रूप से जांच करते हैं और फिर बाघों के धारी पैटर्न का विश्लेषण करते हैं, जो फिंगरप्रिंट की तरह अद्वितीय होते हैं।और अंत में बाघों की संख्या बता दी जाती है।

2. सरिस्का पैलेस

सरिस्का पैलेस का निर्माण अलवर के महामहिम महाराजा सवाई जय सिंह द्वारा 1892 ने करवाया था। भव्य सरिस्का पैलेस अलवर शहर में देखने की सबसे अच्छी जगह है। इस खूबसूरत महल का हर कौना बेहद आकर्षित है। यह भव्य महल 20 एकड़ के हरे भरे परिदृश्य में फैला है जो पर्यटकों को अपनी भव्यता में डूबने पर मजबूर कर देता है।

3. सिलीसेढ़ झील

सिलीसेढ़ झील राजस्थान के खुबसूरत झीलो में से एक है जो नीमराणा का लोकप्रिय जगहों में से एक है। जहा शहर के भीड़–भाड़ से दूर शांति, शुकून और मनोरंजन के लिए सिलीसेढ़ झील पर्यटकों के लिए प्रसिद्ध पिकनिक स्पॉट बना हुआ है। तो यदि आप अलवर की यात्रा की योजना बना रहे है तो अपना कुछ समय सिलीसेढ़ झील में अवश्य व्यतीत करना चाहिए।

4. केसरोली अलवर

केसरोली अलवर के दुर्लभ होटलों में से एक है जो 14 वीं शताब्दी से अस्तित्व में है। हिल फोर्ट–केसरोली उन लोगों के लिए बहुत अच्छी जगह है जो अपने शहर से दूर हफ्ते भर की छुट्टी मानाने के लिए किसी जगह की तलाश में हैं। नीमराना का हिल फोर्ट–केस्रोली एक

शानदार प्राचीन विरासत महल है जो किसी को भी इतिहास में वापस ले जाता है। इस होटल में एक बड़ा स्विमिंग पूल और एक सुंदर बगीचे के साथ कई शानदार सुविधाएं भी हैं। इस होटल के कमरों को पूरी तरह से राजस्थानी शैली में सजाया गया है जो पर्यटकों को रॉयल्टी का अहसास कराते हैं।

5. विनय विलास महल

यह एक वास्तुशिल्प चमत्कार है जिसमे शाही जीवन शैली की एक झलक देखने को मिलती है। इसके भूतल के अलावा, अन्य सभी मंजिलें एक संग्रहालय के रूप में हैं, जो आपको पुराने ऐतिहासिक समय के मधुर रहस्यों और संस्मरणों और राजाओं की दृष्टि से परिचित कराती है। तो आपको अलवर की यात्रा सिलीसेढ़ झील के साथ साथ विनय विलास महल को भी अपनी सूची में अवश्य शामिल करना चाहिय।

6. नीलकंठ मंदिर

नीलकंठ मंदिर टाइगर रिजर्व में लगभग 30 किमी दूर कुछ मंदिरों का एक समूह है जो अब लगभग एक खंडहर बन चुका है लेकिन आज भी यहां के स्थानीय लोग यहां रिजर्व में स्थित कई मंदिरों में विश्वास रखते हैं। नीलकंठ मंदिर अपने धामिक महत्त्व, उत्कृष्ट पत्थर की नक्काशी और यहां के हरे–भरे जंगलों के लिए अलवर का एक प्रमुख स्थल है।

7. विजय मंदिर

विजय मंदिर महल अलवर शहर के केंद्र से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और अलवर के सबसे खास पर्यटन स्थलों में से एक है। बताया आता है कि विजय मंदिर पैलेस को जुनूनी राजा जय सिंह ने अपनी जुनून के परिणामस्वरूप बनाया था। जय सिंह वास्तुकला के

संरक्षक थे, और उन्हें खूबसूरत महल बनाने का जूनून था। विजय मंदिर महल झील के पास शानदार उद्यानों के बीच में स्थित है और इस महल में 105 कमरे हैं जो अच्छी तरह से सजे हुए हैं।

8. पांडुपोल

पांडुपोल एक हनुमान मंदिर है, जो अलवर के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह मंदिर सरिस्का के जंगलों के अंदर स्थित है। एक पौराणिक कथा के अनुसार इस मंदिर में पांडवों ने अपना गुप्त समय बिताया था। अन्य मंदिरों से बिलकुल अलग यहां पर हनुमान की मूर्ति एक वैराग्य की स्थिति में है।

9. मूसी महारानी की छतरी अलवर

राजस्थान के राजपूत वास्तुकला में गर्व और सम्मान का चित्रण करने के लिए आमतौर पर छत्रियों का उपयोग किया जाता है। महाराजा बख्तावर सिंह और उनकी रानी मूसी (Queen Rani Moosi) की शाही समाधि (Cenotaph), को इस स्मारक के मुख्य महल की इमारत के बाहर रखा गया है। यह अलवर के शासकों का एक सुंदर लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का स्मारक है।

10. सिलीसेढ़ झील

सिलीसेढ़ झील एक प्राकृतिक झील है। यह झील दिल्ली–जयपुर मार्ग पर अलवर से 12 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है।

11.नीमराना फोर्ट पैलेस

नीमराना फोर्ट पैलेस पृथ्वीराज चौहान तृतीय की तीसरी राजधानी है। नीमराना फोर्ट

दिल्ली जयपुर हाइवे पर स्थित है और 25 एकड़ क्षेत्र में फैला है।

12.फतहगंज का मकबरा अलवर

अलवर में फतहगंज का मकबरा 5 मंजिला है। फतहगंज का मकबरा दिल्ली में स्थित अपनी समकालीन सभी इमारतों में सबसे उच्च कोटि का है। खूबसूरती के मामले में यह हुमायूँ के मकबरे से भी सुन्दर है।

उपसंहार

पारिस्थितिकी पर्यटन एक स्वाभाविक रूप से संपन्न क्षेत्र है और इसकी सुंदरता और स्थानीय संस्कृति को बनाए रखने की विविधता को संरक्षित करने के लिए एक जागरूक और जिम्मेदार प्रयास से संबंधित है। पर्यावरण पर्यटन पारिस्थितिकी संतुलन को नुकसान नहीं यकीन कर रही है, जबकि उनके प्राकृतिक सुंदरता और सामाजिक संस्कृति के लिए प्रसिद्ध हैं कि स्थानों के लिए यात्रा पर जोर देता।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *Ram, Maya (2017). Rajasthan District Gazetteer Alwar. Jaipur. p. 1.*
2. *Mallik, Swetabja (15 July 2017). "History and Heritage: Examining Their Interplay in India". International Conference on Archaeology, History and Heritage. The International Institute of Knowledge Management - TIIKM: 01–11. doi:10.17501/26510243.2019.1101.*

3. *Rajasthan (India). Chief Town Planner & Architectural Adviser. (2017). Draft master plan for Alwar, 1981-2001. The Chief Town Planner & Architectural Adviser. p. 8. OCLC 1000383312.*
4. *"History of Alwar, Origin of Alwar, Alwar History In Rajasthan India". Indiasite.com. Archived from the original on 27 June 2017. Retrieved 7 March 2013.*